

# डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 23, राज्य पर भोजन समय प्रवचन, लूका 14

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 23 है, भोजन के समय राज्य पर प्रवचन, लूका 14।

लूका के सुसमाचार पर बिब्लिका ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

पिछले व्याख्यानों के बाद जिसमें यीशु ने शिष्यों को चुनौती दी कि सच्चा शिष्यत्व क्या होता है और लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाने के लिए उनकी भविष्यवाणी की घोषणा, अब हम अध्याय 14 की ओर मुड़ते हैं, जिसमें हम यीशु को भोजन के समय की सेटिंग में और उस भोजन के समय की सेटिंग से विकसित होने वाली विभिन्न चीजों को पाते हैं। यहाँ, इस विशेष अध्याय में, जिसे मैं एक रिकॉर्डिंग में डालने का प्रयास करूँगा, मैं आपको यीशु के कुछ ऐसे मुलाक़ात दिखाने का प्रयास करूँगा जो उन्होंने इस बारे में नींव रखते समय की थीं कि कैसे राज्य गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों की देखभाल करता है और जिन्हें समाज महत्वहीन मानता है। जैसा कि आपको याद होगा, पिछले व्याख्यानों में से एक में, मैंने आपका ध्यान उस महिला की ओर आकर्षित किया था जो 18 साल से बीमार थी और जो आराधनालय में ठीक हो गई थी, और आराधनालय के शासक को इससे परेशानी थी।

यहाँ हम भोजन के समय की सेटिंग में यीशु को देखने के लिए आगे बढ़ते हैं, लेकिन उससे पहले, मुझे पहली बार कुछ ऐसी चीज़ों को रेखांकित करने का समय चाहिए जो सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक हैं जब आप ल्यूक के सुसमाचार में भोजन के समय के दृश्यों के बारे में सोचते हैं। मुझे लगा कि शायद यह विशेष अवसर हमें उस पर गौर करने के लिए एक बहुत अच्छी जगह प्रदान करता है। एक, भोजन के समय की सेटिंग पहली सदी की सेटिंग में बहुत, बहुत महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य हैं।

भोजन के समय के लिए, खासकर जब यह पारंपरिक समय से परे हो जाता है जिसमें लोग बाहरी लोगों को आमंत्रित करने के लिए भोजन करते हैं, तो यह उन लोगों को परिभाषित करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है जिन पर परिवार भरोसा करता है, जिन्हें परिवार अपने स्थान पर आमंत्रित करना चाहता है, जिन्हें परिवार अधिक जानना चाहता है। मेजबान और अतिथि दोनों इसे एक सम्मानजनक इशारा मानते हैं और इसे बहुत गंभीरता से लेते हैं। जब हम यीशु को फरीसियों के साथ भोजन करते हुए देखते हैं, तो यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि जब भी यीशु को फरीसियों के साथ भोजन के समय आमंत्रित किया जाता है, तो कोई उसे समूह में इकट्ठा होने के लिए आमंत्रित कर रहा होता है जहाँ अधिक फरीसी होंगे।

वास्तव में, यह किसी व्यक्ति द्वारा यीशु को सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित करने तथा लोगों के साथ भोजन के समय में भाग लेने के लिए यीशु की ओर से सम्मान की भावना रखने का सामाजिक कार्य करता है। ऐसा कहने के बाद, ऐसा अक्सर हुआ कि जब यीशु फरीसियों के साथ

भोजन के समय होता है, तो लूका दूसरे समूह, नोमोस, वकीलों को योग्य बनाना पसंद करता है। वे भी वहाँ हो सकते हैं, और जब भी लूका फरीसियों के साथ वकीलों की उपस्थिति का उल्लेख करता है, तो वह हमेशा भोजन के समय होने वाले संघर्ष को दर्शाता है।

इसलिए, भोजन के समय फरीसियों के साथ यीशु के एकत्र होने को एक समूह के रूप में सोचें। जो लोग समूह से बाहर हैं, उन्हें ऐसे स्थान पर आमंत्रित नहीं किया जाएगा, भले ही फरीसियों के साथ भोजन करने के लिए कुछ रीति-रिवाज़ हों, जैसे कि हमने अतीत में देखा था कि हाथ धोने के लिए पानी में हाथ डुबोया जाता था। कुछ विद्वानों ने ग्रीको-रोमन संगोष्ठी के प्रकाश में यीशु और फरीसियों के साथ भोजन के समय के प्रवचन को देखा है, उदाहरण के लिए, जहाँ लोग मिलते हैं, भोजन करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, बहस करते हैं, बौद्धिक विचारों को साझा करते हैं, और लगभग बहुत ही अच्छे अकादमिक तरीके से, यदि आप चाहें, तो बैठकर महान विचारों को साझा करते हैं और एक दूसरे के साथ ज्ञान साझा करने से लाभ उठाते हैं।

कोई इसे इस तरह से देख सकता है, लेकिन हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए कि फरीसी दूसरे मंदिर यहूदी धर्म में एक धार्मिक दल थे। साथ ही, जब मैं भोजन के समय से संबंधित पाठ को देखता हूँ, तो मैं आपका ध्यान फिर से सम्मान और शर्म की संस्कृति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस संस्कृति में, सम्मान बहुत महत्वपूर्ण है, और शर्म एक बड़ी बात है।

इसलिए, एक सम्माननीय अतिथि होना या किसी को सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा करना वास्तव में बहुत नुकसानदेह है। हम भोजन के समय यीशु को फरीसियों के साथ देखेंगे, और सेटिंग खुद को एक ऐसी जगह पर ले जाएगी जहाँ मेजबान और अतिथि के बीच देने और लेने का सम्माननीय स्थान वास्तव में संघर्ष और विवाद के अजीब क्षणों में बदल सकता है। भोजन के समय आमतौर पर जो चीज़ें होती हैं उनमें से एक यह है कि उन लोगों के बीच बंधन को बढ़ाता है जो पहले से ही एक समूह में हैं और उस समूह के भविष्य के सदस्यों के लिए एक अवसर पैदा करते हैं कि वे आएँ और समूह को उन्हें देखने दें, यदि आप चाहें तो।

ग्रीको-रोमन दुनिया में भोजन के समय की इस संक्षिप्त समझ को पृष्ठभूमि में रखते हुए, आइए हम लूका अध्याय 14, पद 1 की ओर मुड़ें, और मैंने पद 1 से 6 तक पढ़ा। सब्त के दिन, जब वह फरीसियों के एक सरदार के घर भोजन करने गया, तो वे उसे ध्यान से देख रहे थे, और देखो, उसके सामने एक आदमी था जिसने पाप छोड़ दिया था। और यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा, क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है या नहीं? लेकिन वे चुप रहे। तब उसने उसे ले जाकर चंगा किया और उसे विदा किया।

और उसने उनसे कहा, तुम में से कौन है जिसका बैल सब्त के दिन कुएँ में गिर जाए और वह उसे तुरन्त बाहर न निकाले? और वे इन बातों का उत्तर नहीं दे सके। यहाँ, मैं आपका ध्यान भोजन के समय की सेटिंग की ओर आकर्षित करता हूँ जैसा कि आप अंश में देख सकते हैं। फरीसियों के एक नेता ने यीशु को आमंत्रित किया था, यह सोचकर कि इस सभा में और भी फरीसी हैं। पद 3 हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करता है कि वहाँ वकील और फरीसी हैं जिन्हें यीशु इस विशेष अवसर पर संबोधित करेंगे।

हम उस आदमी के बारे में निश्चित नहीं हैं जो जलोदर से बीमार है। वह फरीसी था या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह एक मुद्दा है कि यीशु इस आदमी को कब ठीक करेंगे। प्रवचन को ध्यान से देखने पर, मैं देखता हूँ कि यह फरीसियों की एक मेज़ संगति थी, और ऐसा हुआ कि यह सब्त के दिन एक मेज़ संगति थी।

ध्यान दें कि सब्त के दिन का ज़िक्र लूका के प्रवचन में पहले ही आ चुका है, जो दर्शाता है कि जब भी यीशु सब्त के दिन चंगा करता था, तो इसे फरीसी या आराधनालय के शासक द्वारा काम करने के रूप में समझा जाता था, और इसे अक्सर उस अर्थ में अच्छी तरह से स्वागत नहीं किया जाता था। यहाँ संगति केवल आंतरिक मंडली के लिए आरक्षित है, इसलिए समझें कि जब यीशु मेहमान था, तो यीशु को मेज़बान के सम्मान के संकेत के रूप में मेज़बान की आज्ञा का पालन करना चाहिए था। जैसा कि मैंने पहले संकेत दिया था, उपस्थित वकील और फरीसी संकेत देते हैं कि, वास्तव में, संघर्ष होने वाला है।

जिस व्यक्ति को ठीक किया गया था, उसे जलोदर था। आप पूछ सकते हैं कि जलोदर क्या है? अंग्रेजी बोलने वालों के लिए, यह कोई मुद्दा नहीं हो सकता है, लेकिन मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिए जो मूल अंग्रेजी वक्ता नहीं है, मुझे कहना होगा कि जलोदर उनमें से एक है जिसके बारे में मुझे यह समझने के लिए अधिक जानकारी की आवश्यकता थी कि यह स्थिति क्या है। जलोदर वह स्थिति है जिसमें त्वचा में किसी प्रकार की समस्या होती है, और किसी प्रकार का तरल पदार्थ होता है, और फिर वह किसी प्रकार की सूजन का कारण बनता है।

कुछ मामलों में, जलोदर कुछ रोग का कारण बन सकता है या इसका परिणाम हो सकता है। तो, एक त्वचा की स्थिति की कल्पना करें जो फरीसियों के साथ व्यवहार करने में अपने आप में एक अशुद्ध तत्व हो सकती है। अपने मन में उस विचार को रखते हुए, आइए श्लोक 7 से पढ़ें और देखें कि लूका हमारे साथ क्या साझा करता है।

अब, उसने आमंत्रित लोगों को एक दृष्टांत सुनाया। यह यीशु का भोजन के समय दृष्टांत बताना है। जब आप देखते हैं कि उन्होंने सम्मान का स्थान कैसे चुना, तो उनसे कहिए, जब कोई आपको शादी की दावत में आमंत्रित करे, तो सम्मान के स्थान पर न बैठें, कहीं ऐसा न हो कि वह आपसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति को आमंत्रित कर ले।

और जिसने तुम दोनों को आमंत्रित किया है, वह आकर तुमसे कहेगा, अपनी जगह इस व्यक्ति को दे दो। और तब तुम लज्जित होकर सबसे नीचे की जगह लेने लगोगे। लेकिन जब तुम्हें आमंत्रित किया जाए, तो जाकर सबसे नीचे की जगह पर बैठो ताकि जब तुम्हारा मेज़बान आए, तो वह तुमसे कहे, मित्र, ऊपर चढ़ जाओ।

तब तुम उन सब के सामने आदर पाओगे जो तुम्हारे साथ मेज पर बैठते हैं। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा। और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।

पद 12. जब उसने उस व्यक्ति से यह कहा जिसने उसे आमंत्रित किया था, तो उसने उस व्यक्ति से यह कहा जिसने उसे आमंत्रित किया था: जब आप रात का खाना या दावत देते हैं, तो अपने दोस्तों या अपने भाइयों या अपने रिश्तेदारों या अमीर पड़ोसियों को आमंत्रित न करें, ऐसा न हो कि वे भी आपको आमंत्रित करें और बदले में आपको पुरस्कृत करें। लेकिन जब आप दावत देते हैं, तो गरीबों, अपाहिजों, लंगड़ों, अंधों को आमंत्रित करें, और आप धन्य होंगे क्योंकि वे आपको पुरस्कृत नहीं कर सकते, क्योंकि धर्मी लोगों के पुनरुत्थान के दिन आपको पुरस्कृत किया जाएगा।

इस विशेष अंश में ध्यान देने योग्य कुछ बातें। यीशु द्वारा सम्मान के स्थान पर बैठने के बारे में पहली बार बात करने पर, यीशु कुछ भी नया नहीं कह रहे हैं जो ज्ञान लेखकों ने अतीत में नहीं कहा है। पदावनत होने की अपेक्षा पदोन्नत होना हमेशा बेहतर होता है।

सम्मान और शर्म की संस्कृति में, किसी व्यक्ति की मेज या भोज में स्थिति व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को दर्शाती है। दूसरे शब्दों में, जैसा कि हम अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन या दुनिया के अन्य स्थानों में कहते हैं, हमारे पास उच्च मेज है, और हमारे पास अन्य स्थान हैं। यीशु का कहना है कि लोगों के एक समूह में, अर्थात् फरीसी और वकील जो सार्वजनिक छवि से ग्रस्त हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि जब किसी को शादी के भोज में आमंत्रित किया जाता है, तो सबसे कम स्थान लेना और सम्मान के स्थान पर पदोन्नत होना महत्वपूर्ण है, बजाय इसके कि खुद को एक निश्चित सम्मान का दर्जा दिया जाए और केवल पदावनत होने के लिए एक स्थान पर बैठें, यह जानते हुए कि यहाँ सम्मान और शर्म का मुद्दा कुछ भी नहीं है।

यीशु कहते हैं कि ऐसी जगह चुनें जो सम्मान और प्रतिष्ठा को प्रदर्शित न करे, और आपको सम्मान के स्थान पर पहुँचाया जाएगा। दूसरे उदाहरण में, जब वह भोज के मेज़बान की ओर मुड़ता है, तो आप देखते हैं कि यीशु क्या करने की कोशिश कर रहा है। वह सम्मान और उस संस्कृति के दूसरे हिस्से, आतिथ्य संस्कृति की अपील करता है, जिसमें पारस्परिकता का तत्व आतिथ्य का हिस्सा है।

महान लोग, महत्वपूर्ण लोग, भोज में उन्हें सम्मानित करने के लिए अपने आस-पास कुछ लोगों को लाते हैं, यह जानते हुए कि वे भी अवचेतन रूप से उनके प्रति पारस्परिकता के मानदंड के लिए ऋणी हैं, जहाँ उन्हें ऐसी सभा में आमंत्रित किया जा सकता है। यीशु अपने मेज़बान को दो आधारों पर चुनौती देते हैं। एक है शहर की व्यवस्था।

दूसरा, आप किसे किसी महत्वपूर्ण भोज में आमंत्रित करते हैं। दूसरे दरवाज़े पर, जब वह इस बात पर बात करता है कि किसे आमंत्रित करना है, तो वह वहाँ मौजूद श्रोताओं, यानी फरीसी और वकीलों को आसानी से परेशान कर सकता है। यीशु ने कहा, अपने जैसे लोगों को आमंत्रित न करें क्योंकि वे आपको वापस आमंत्रित करेंगे।

वे आतिथ्य संस्कृति में पारस्परिकता के रिवाज के अनुसार आपको चुकाएँगे। ऐसे लोगों को आमंत्रित करें जो चुका नहीं सकते। फिर वह उन विशिष्ट लोगों के नाम बताता है जो उन्हें बहुत असहज कर सकते हैं।

ये वे लोग हैं जिन्हें वे तुच्छ समझते हैं और अपनी मेज़ पर नहीं बुलाना चाहते। वह मेज़बान से कहता है, गरीबों, अपंगों, लंगड़ों, अंधों को आमंत्रित करो, और तुम धन्य हो जाओगे क्योंकि वे तुम्हें ऋण नहीं चुका सकते। वाह।

आप देखिए, अब यीशु सामाजिक जुड़ाव दिखाने के लिए पश्चाताप की सीधी चुनौती पर चले गए हैं। और यहाँ, लूका के तरीके से, लूका यह दिखाने जा रहा है कि गरीब और हाशिए पर पड़े लोग परमेश्वर के राज्य में जो कुछ कर रहे हैं, उसके अभिन्न अंग हैं। अलिखित कोड मान लिया गया है।

मैंने देखा कि संगति की मेज पर बैठने की जगह और स्थिति बरकरार है। वे इसे उसी सभा में जानते हैं जहाँ लोग सम्मान पाने के लिए कुछ स्थानों पर बैठते हैं। और इसलिए, यीशु का कथन लगभग उनके सामने ही घटित होता है।

वे इसे समझ गए। यीशु की शालीनता और मर्यादा की अपील फरीसियों में कुछ उकसावे की तरह थी। सम्मान पाने की उनकी इच्छा को अब परमेश्वर के राज्य में विनम्रता की मुद्रा अपनाने के लिए चुनौती दी जा रही थी।

एक ऐसा रुख जो बाद के बयान में इस तथ्य पर भी सवाल उठाने की ओर ले जाएगा कि वे अपने बीच हाशिए पर पड़े लोगों को मेज पर लाते हैं। आप देखिए, यीशु इन फरीसियों और वकीलों को दिखाना चाहते थे कि मेज पर पदोन्नति और सम्मान हमेशा अच्छा होता है जब मेजबान उन्हें प्रदान करता है। उनसे अपील करना सीधा बयान है।

किसी को नम्र होना सीखना चाहिए। और अगर वे नम्रता का मार्ग चुनेंगे तो उन्हें ऊंचा किया जाएगा। यीशु का निमंत्रण बहुत ही मजबूत है जब वे कहते हैं, अपने भाइयों को आमंत्रित न करें।

दोस्तों को न बुलाएँ। अमीर पड़ोसियों को न बुलाएँ। अपंगों को बुलाएँ।

गरीबों को आमंत्रित करें। लंगड़ों को आमंत्रित करें। आप देखिए, यीशु यहाँ संकेत दे रहे हैं कि परमेश्वर के राज्य में संगति की मेज पर सभी लोगों को उपस्थित होना चाहिए।

इस तथ्य के बावजूद कि अध्याय आठ से, मैंने आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि यरूशलेम जाते समय यीशु के पीछे-पीछे महिलाएँ भी थीं। यीशु आम लोगों के साथ-साथ कुलीन लोगों के जीवन को भी छू रहे हैं। यीशु सामाजिक संस्थाओं या सामाजिक क्षेत्रों के किसी भी समूह को बाहर नहीं करते हैं।

परमेश्वर के राज्य में सभी शामिल हैं। इस पाठ को पढ़ते समय जो बातें ध्यान में आती हैं, उनमें से एक है नीतिवचन में दिए गए ज्ञान के शब्द, जो इस अंश में यीशु द्वारा कही गई बातों की प्रतिध्वनि करते प्रतीत होते हैं। नीतिवचन 25, आयत छह से सात में लिखा है, राजा के सामने अपने आपको आगे मत रखो, और न ही महान लोगों के स्थान पर खड़े होओ।

क्योंकि यह कहना बेहतर है कि यहाँ ऊपर आओ, बजाय इसके कि कुलीन लोगों की मौजूदगी में तुम्हें नीचा दिखाया जाए। यीशु सिखाते हैं कि सांस्कृतिक शालीनता और सम्मान क्या माना जाता है, लेकिन जहाँ लोग सम्मान के प्रति आसक्त होते हैं, वे खुद को नियुक्त कर सकते हैं और अपनी प्रतिष्ठा को खतरे में डाल सकते हैं। परमेश्वर के राज्य में मर्यादा अलग है।

फिर यीशु भोज के निमंत्रण के बारे में बात करते हैं और भोजन के समय के दृश्यों, कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में विस्तार से बताते हैं जो सामने आ सकती हैं, और परमेश्वर के राज्य के संबंध में सीखी जा सकने वाली बातों के बारे में बताते हैं। श्लोक 15 में मैंने पढ़ा, जब उसके साथ खाने वालों में से एक को यह बात हुई, तो उसने उससे कहा, धन्य है वह हर कोई जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा। और उसने उससे कहा, एक आदमी ने एक बार एक बड़ी दावत दी और बहुतों को आमंत्रित किया।

और उस समय, और भोज के समय, उसने अपने सेवक के हाथ नेवताधारी लोगों से कहला भेजा, कि आओ, क्योंकि अब सब कुछ तैयार है। परन्तु वे सब एक समान बहाने बनाने लगे। पहिले ने उससे कहा, मैंने एक खेत मोल लिया है।

मुझे बाहर जाकर इसे देखना चाहिए। कृपया मुझे माफ़ करें। दूसरे ने कहा कि मैंने पाँच जोड़ी बैल खरीदे हैं।

मैं जाकर उनकी जांच करूंगा, मुझे क्षमा करें। दूसरे ने कहा, मैंने ब्याह कर लिया है, इसलिये नहीं आ सकता। तब उस दास ने जाकर अपने स्वामी को ये बातें बता दीं।

तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने सेवक से कहा, “जल्दी से नगर के चौकों और गलियों में जाकर कंगालों, टुण्डों, अंधों और लंगड़ों को ले आओ। उन लोगों के नाम देखो, जिनका उल्लेख पिछली दृष्टान्त में किया गया है।” सेवक ने कहा, “हे स्वामी, आपने जो आज्ञा दी थी, वह पूरी हो गई है, फिर भी अभी जगह है।”

और स्वामी ने नौकर से कहा कि सड़कों और बाड़ों पर जाकर लोगों को बुलाओ, ताकि मेरा घर भर जाए। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, उन लोगों में से कोई भी जो आमंत्रित किए गए हैं, मेरी दावत का स्वाद नहीं चखेंगे। दावत के इस दृष्टान्त में, हम देखते हैं कि यीशु वास्तव में एक निश्चित तरीके से हैं। एक और कथन एक दृष्टान्त देने के लिए उकसाने वाला है।

एक अतिथि उन लोगों के लिए आशीर्वाद के बारे में बात करता है जो परमेश्वर के राज्य में भोजन का आनंद ले सकेंगे। और यही बात अकेले ही इस बात को जन्म देती है, जहाँ यीशु भोज के बारे में बात करते हैं। उन तीन लोगों पर ध्यान दें जिन्हें पहले आमंत्रित किया गया था और जिन्होंने बहाने बनाए।

वे सही लोग थे जिन्हें भोज में होना चाहिए था। लेकिन उन तीनों के पास बहाने थे। बहाने से गुस्सा भड़क गया, और मैंने मेजबान की ओर से एक भावनात्मक प्रतिक्रिया देखी।

गुस्से और हताशा में वह दूसरे समूह के आमंत्रित लोगों को बुलाने का आदेश देता है। वे सामाजिक रूप से बहिष्कृत लोग हैं। वे गरीब, अपंग, लंगड़े हैं।

और नौकर ने जाकर उन्हें अंदर बुलाया। और फिर उसने कहा कि जगह है। उसने कहा, अब जाओ और दूसरे लोगों को लेकर आओ।

उन्होंने कहा कि वहां की भाषा पर गौर करें, जो बाहर से आए लोगों को अंदर आने के लिए मजबूर करती है। ये वे लोग हैं जो अन्यथा ऐसी सभा में उपस्थित होने के योग्य नहीं समझेंगे। हममें से अधिकांश लोग सोचते हैं कि यह गैर-यहूदियों के संदर्भ में होगा।

लेकिन ध्यान दें कि यीशु इस दृष्टांत में क्या नहीं कह रहे हैं। यीशु यह नहीं कह रहे हैं कि पहले तीन समूह पूरी तरह से बाहर हो गए हैं। इस दृष्टांत को अक्सर यह समझने के लिए पढ़ा जाता है कि यीशु ने कुछ यहूदियों या कुछ कुलीन लोगों को भोज में आमंत्रित किया था, और क्योंकि वे असफल हो गए, इसलिए उन्होंने उनकी जगह दूसरे लोगों को शामिल कर लिया।

शायद यह समझने के लिए बेहतर पढ़ना चाहिए कि कैसे यीशु, कुलीन लोगों के इस समूह से बात करके, उन लोगों के समूह को आमंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं, जिनका उन्होंने पहले मेज़बान को उल्लेख किया था कि उन्हें ऐसे लोगों के रूप में आमंत्रित किया जाना चाहिए जिन्हें इस तरह की सभा में आमंत्रित किया जाना चाहिए। यदि आप इसे इस तरह से पढ़ते हैं, तो यीशु कह रहे हैं कि उनके साथ बैठे लोग बहाने बना रहे हैं। लेकिन ओह, वह कितना चाहता है कि वे बहिष्कृत लोगों को अपने समूह में लाने की आवश्यकता पर विचार करें।

क्योंकि परमेश्वर के राज्य में कोई भी व्यक्ति वंचित नहीं है। समाज से बहिष्कृत, हाशिए पर पड़े लोग, गरीब, अपंग, अंधे और लंगड़े लोग परमेश्वर के साथ भोजन की मेज पर अपना स्थान पा सकते हैं। यहाँ तक कि अन्यजातियों को भी परमेश्वर के राज्य में स्थान दिया जाएगा।

मुझे लगता है कि जोएल ग्रीन ने इस दृष्टांत में जो कुछ भी चल रहा है, उसका सारांश बहुत अच्छी तरह से दिया है जब वह अपने लूका के सुसमाचार में लिखते हैं, और मैं उद्धृत करता हूँ। वास्तव में, मुद्दा यह प्रतीत होता है कि, अब सामाजिक संबंधों की एक बदलती समझ से काम करते हुए, यह गृहस्थ अपने मेहमानों में से किसी को भी शामिल करेगा, कि कोई भी इतना ठोस, इतना दुखी नहीं है, कि उसे मेज पर दोस्त के रूप में गिना जाए, इस प्रकार शहर की पंक्तियाँ और गलियाँ निम्न स्थिति वाले लोगों के निवास का स्थान होंगी, चाहे उनके तिरस्कृत व्यवसाय, उनकी पारिवारिक विरासत, उनकी धार्मिक अशुद्धता, उनकी गरीबी, या किसी अन्य कारण से। आप देखिए, यह यीशु की कहानी के स्वामी को एक ऐसे अभिजात वर्ग के उदाहरण के रूप में पहचानता है जिसने यीशु की पिछली सलाह को गंभीरता से लिया और उन लोगों को आतिथ्य प्रदान किया जो आम तौर पर अपनी अपमानजनक स्थिति और शक्ति और विशेषाधिकार के घेरे से उनके बहिष्कार द्वारा परिभाषित होते हैं। दूसरे शब्दों में, यीशु मेजबान और अन्य लोगों से बात कर सकते थे कि, वास्तव में, परमेश्वर के राज्य में, लोगों के इस समूह को एक मेज पर जगह, एक निमंत्रण दिया जाना चाहिए।

यीशु जानते हैं कि यह उनके श्रोताओं के लिए कितना परेशान करने वाला हो सकता है, इसलिए वे उन्हें शिष्यत्व की कीमत और शर्तों को समझने के लिए चुनौती देते हैं। क्योंकि अगर वे गरीबों, लंगड़ों, अंधे, अपंगों और अन्यजातियों के लिए जगह बनाना समझेंगे, तो वे समझेंगे कि परमेश्वर के राज्य में शिष्य बनना आसान बात नहीं है। अब बड़ी भीड़ उसके साथ थी, और उसने मुड़कर उनसे कहा, अगर कोई मेरे पास आए और अपने पिता और माँ और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों, हाँ, यहाँ तक कि अपने प्राण से भी घृणा न करे, तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह मेरा चेला नहीं हो सकता। क्योंकि तुम में से ऐसा कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने के लिये मेरे पास बिसात है कि नहीं? नहीं तो जब नेव डाल चुका हो और तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसका उपहास करने लगेंगे, कि यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार नहीं कर सका। या ऐसा कौन राजा है जो किसी दूसरे राजा से युद्ध करने जाए, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो राजा 20,000 लेकर उसके विरुद्ध आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका साम्हना कर सकता हूँ? या नहीं, तो जब तक वह बहुत दूर रहे, वह अपने लोगों को भेजकर मेलमिलाप की शर्तें मांग ले। इसलिये तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

नमक अच्छा है, लेकिन अगर नमक का स्वाद चला जाए, तो उसका नमकीनपन कैसे वापस आएगा? यह न तो मिट्टी के लिए उपयोगी है और न ही ढेर के लिए। इसे फेंक दिया जाता है। जिसके पास सुनने के लिए कान है, वह सुन ले।

इन शिक्षाओं में यीशु फरीसियों, वकीलों और अपने श्रोताओं को शिष्यत्व के बारे में अपनी समझ की समीक्षा करने और शिष्यत्व की कीमत को स्वीकार करने के लिए चुनौती दे रहे हैं। यहाँ, मैं आपको याद दिलाता हूँ कि यीशु कुछ महत्वपूर्ण बातों से निपट रहे हैं। यहाँ आप लूका 25 में संदर्भ पा सकते हैं कि लूका यात्रा के मूल भाव को यह कहने के लिए स्थापित करता है कि यीशु अभी भी यरूशलेम की ओर जा रहा है, और अब श्रोता एक बड़ी भीड़ है जिससे उसे निपटना है।

यहाँ देखने वाली दूसरी बात यह है कि अगर लोग उसका अनुसरण करना चाहते हैं तो उन्हें संबंधों में आने वाली बाधाओं को तौलना होगा। इस श्रोतागण में फरीसी और वकील शामिल हो सकते हैं, लेकिन लूका कहता है कि यह एक बड़ी भीड़ है, जो हमें सुझाव देता है कि यह लोगों की एक बड़ी भीड़ है, और वहाँ वह फिर से उनकी ओर मुड़ता है और उन्हें चुनौती देता है जो उसने पहले रिश्तेदारी और रिश्तेदारी से ऊपर राज्य मिशन को प्राथमिकता देने के बारे में दी थी। यीशु कहते हैं कि एक सच्चे अनुयायी बनने के लिए व्यक्ति को अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, भाइयों, बहनों और यहाँ तक कि स्वयं के प्रति भी वफ़ादारी छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जब यीशु ने कहा कि तुम्हें अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, भाइयों और बहनों से घृणा करनी चाहिए, तो कृपया हमें इसका अर्थ घृणा, निंदा और इस तरह की अन्य बातों से नहीं लेना चाहिए। वह यह सुझाव नहीं दे रहा है कि किसी को अपने परिवार से घृणा करनी चाहिए। वह सुझाव देता

है कि यहाँ घृणा की भाषा का उपयोग किसी की वफादारी की भावना को त्यागने और राज्य के मिशन को प्राथमिकता देने के लिए किया जाता है।

यीशु श्रोताओं को शिष्यत्व की कीमत पर विचार करने के लिए चुनौती देते हैं। शिष्यत्व में कष्ट शामिल हो सकते हैं, और जो लोग यीशु के शिष्य बनना चाहते हैं, उन्हें कीमत गिननी होगी। कीमत गिनना ठीक वैसे ही है जैसे एक बुद्धिमान बिल्डर निर्माण परियोजना शुरू करने से पहले कीमत गिनता है, और एक राजा युद्ध के समय में सैनिकों को युद्ध के मैदान में भेजने से पहले कीमत गिनता है।

आप देखिए, कीमत गिनना महत्वपूर्ण है क्योंकि यीशु पीड़ा का एक तत्व भी पेश करते हैं, जिसका अर्थ है कि किसी को यह जानना होगा कि उसका अनुसरण करने के लिए उन्हें अपना क्रूस उठाना पड़ सकता है। लूका वही दोहरा रहा है जो उसके लेखन से पहले ही हो चुका है, कि यीशु मर जाएगा, और उस अर्थ में, यीशु का क्रूस उठाना राज्य की कीमत के लिए बलिदान उठाना है। राजा के सादृश्य में यीशु उसे सुन रहे लोगों को याद दिलाते हैं कि युद्ध की भाषा में भौतिक संपत्ति भी एक बाधा हो सकती है और किसी को भी युद्ध में शामिल होने से पहले कीमत गिनने की आवश्यकता होती है।

यीशु इस बात से बहुत चिंतित हैं कि लोग राज्य को उसके वास्तविक रूप में स्वीकार करें, राज्य की प्रतिष्ठा को प्राथमिकता दें, और समझें कि राज्य में शामिल लोगों में जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग शामिल हैं। लेकिन लोगों से परे, चीजें और संपत्तियाँ भी परमेश्वर के राज्य में जगह पाने की किसी की कोशिश में बाधा बन सकती हैं। नमक के उदाहरण में, यीशु यह कहने की कोशिश कर रहे हैं कि लोगों को इस तथ्य के प्रति जागरूक होने की ज़रूरत है कि कोई व्यक्ति आधे-आधे में नहीं जा सकता और अपने सार का आधा हिस्सा खोकर बाकी को बरकरार नहीं रख सकता।

यदि नमक अपना खारापन खो देता है, तो यह खाद या संरक्षण के लिए अच्छा नहीं है। यीशु कहते हैं, इसलिए, तुम में से जो कोई भी अपना सब कुछ त्याग नहीं देता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। वाह! तुम में से जो कोई भी अपना सब कुछ त्याग नहीं देता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

नमक अच्छा है, लेकिन अगर नमक का स्वाद खत्म हो गया है, तो उसका नमकीनपन कैसे वापस आएगा? प्रतिबद्ध रहें और पूरी तरह से प्रतिबद्ध रहें। आप यहाँ देखें, मुझे लगता है कि ल्यूक टिमोथी जॉनसन ने इसका सार पकड़ लिया है जब वह लिखते हैं कि भोज का दृष्टांत और शिष्यत्व की मांगें एक साथ यहाँ एक ही बात कहती हैं और पैगंबर द्वारा जारी ईश्वर के आह्वान को जीवन के अन्य सभी दावों से संबंधित होना चाहिए। दृष्टांत दिखाता है कि व्यक्तियों और चीजों के साथ उलझाव किस तरह निमंत्रण के इनकार को प्रभावित कर सकता है।

मांगें स्पष्ट करती हैं कि शिष्यत्व का चुनाव पूरी तरह से संपत्ति या लोगों में शामिल होने के खिलाफ चुनाव की मांग करता है। संपत्ति या लोगों की मांग में। इसमें कुछ भी ऐसा नहीं है जो कोमल या आश्वस्त करने वाला हो, लेकिन मुझे जॉनसन का यह कथन पसंद है। लेकिन जैसा कि

नमक पर अंतिम कथन बताता है, शिष्यत्व का कोई भी तरीका जो दोनों काम करने की कोशिश करता है, उसे परिभाषित करने की कोशिश करता है, संपत्ति और पैगंबर की पुकार दोनों द्वारा परिभाषित किया जाता है, जैसे, बिना स्वाद वाले नमक की तरह होगा।

यह किसी काम का नहीं है। इसे फेंक दिया जाता है। जॉनसन भोज और शिष्यत्व के बीच के संबंध को दर्शाता है और यह सुझाव देने की कोशिश करता है कि यीशु जो कह रहा है वह यही है।

संपत्ति और लोगों और उन सभी चीज़ों में जुनून और भागीदारी लोगों को परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर द्वारा किए जा रहे कार्यों में पूरी तरह से भाग लेने की अनुमति नहीं देगी। अध्याय 14, यदि आप चाहें, तो भोजन के समय के प्रवचन में, वह स्थान है जहाँ यीशु एक ऐसी संस्कृति में सम्मान का पीछा करने के तरीके को चुनौती देने का तरीका खोजता है जहाँ लोग सम्मान और शर्म से ग्रस्त हैं - विनम्रता को एक महान गुण के रूप में चुनौती देते हैं।

संभावित शिष्यों, फरीसियों और वकीलों को यह समझने के लिए चुनौती देना कि परमेश्वर के राज्य में सभाओं में समाज के सबसे हाशिए पर पड़े लोगों और सबसे बहिष्कृत लोगों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। हाँ, सच्चे शिष्यत्व को अपनी प्राथमिकता को फिर से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। इस प्राथमिकता में लोगों की भागीदारी और भौतिक संपत्ति के प्रति प्रतिबद्धता शामिल है।

यीशु हमें लोगों के साथ सभी संबंधों को त्यागने के लिए नहीं बुला रहे हैं, बल्कि वे हमें ईश्वर के साथ अपने संबंधों और मानवीय संबंधों में राज्य की मांगों को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करते हैं। वे यह नहीं कहते कि राज्य में होना गरीब होने के बराबर है। नहीं, लेकिन वे कह रहे हैं कि जिन लोगों को अधिक पाने का सौभाग्य मिला है, उन्हें यह समझना चाहिए कि राज्य का एक सिद्धांत उन लोगों को आमंत्रित करना है जो गरीब, हाशिए पर पड़े हैं, बहिष्कृत हैं, लंगड़े, अपंग और अंधे हैं।

वह यह नहीं कह रहा है कि राज्य में रहने से किसी को अपमानजनक माना जाना चाहिए। नहीं, वह यह कहने की कोशिश कर रहा है कि हाँ, राज्य में भी सम्मान का स्थान महत्वपूर्ण है, लेकिन राज्य में लोगों को विनम्रता का भाव अपनाना चाहिए, और विनम्रता का वह भाव स्वाभाविक रूप से उनकी सामाजिक स्थिति को ऊपर ले जाएगा जो उन्हें वांछित सम्मान प्रदान करेगा। आप देखिए, शिष्यत्व की कीमत को अगर गंभीरता से गिना जाए और उसे उसके वास्तविक रूप में समझा जाए, तो हम वह जीवन जी पाएँगे जो यीशु ने स्वयं जिया था।

जो कोई भी उसका सच्चा अनुयायी बनना चाहता है, उसे आधे-अधूरे मन से नहीं, बल्कि पूरे दिल और दिमाग से पूरी तरह से प्रतिबद्ध होने के लिए तैयार रहना चाहिए, सभी हाथ जोड़कर, मालिक की इच्छा पूरी करने की कोशिश करनी चाहिए। मैंने इस व्याख्यान की शुरुआत आपको भोजन के समय के महत्व से परिचित कराकर की, और ऐसा लग रहा था कि हम पार्टी के समय और मौज-मस्ती करने और भोजन का आनंद लेने के तरीके के बारे में बात करने जा रहे हैं। हाँ,

यह वैसा ही निकला, लेकिन हमेशा की तरह, हमने देखा कि भोजन का समय यीशु के लिए यह बताने का अवसर बन गया कि किसे शामिल किया जाए।

यीशु की सेवकाई में सभी महत्वपूर्ण हैं। देखिए, मैंने नाइजीरिया में कहा है कि अगर आप ईसाई हैं, तो आपको यह समझना चाहिए कि योरूबा को इग्बो के साथ खाने की मेज़ पर आमंत्रित किया जाता है। हौसा और इग्बो को योरूबा की खाने की मेज़ पर आमंत्रित किया जाता है।

यदि आप घाना से अनुसरण कर रहे हैं, तो समझें कि ईश्वर के राज्य में, अकान की मेज़ पर नोगना को आमंत्रित किया जाता है, इग्बो को आमंत्रित किया जाता है, हौसा को आमंत्रित किया जाता है, और जिन जनजातियों के बारे में आप सोच सकते हैं उन्हें आमंत्रित किया जाता है। किसी को भी बाहर नहीं रखा गया है। नस्ल के संदर्भ में, सफेद, काले, भूरे, पीले, आप इसे नाम दें, बाल, बिना बाल, लंबे, छोटे, सभी को ईश्वर के राज्य की खाने की मेज़ पर आमंत्रित किया जाता है।

परमेश्वर का राज्य संसार में काम करने वाला परमेश्वर है, जहाँ परमेश्वर लोगों और उन सभी लोगों तक पहुँच रहा है जिन्हें उसने अपनी छवि और समानता में बनाया है। राज्य की माँगों के लिए यह आवश्यक है कि हम लोगों से ज़्यादा संपत्ति, सामान्य लोगों से ज़्यादा पद और प्रतिष्ठा को प्राथमिकता न दें। परमेश्वर सभी में रुचि रखता है, और मुझे आशा है कि मेरे साथ मिलकर, हम अपने ईसाई कार्य में राज्य की माँगों पर ध्यान देने का प्रयास करेंगे जो इस भोजन के समय के प्रवचन में बताई जा रही हैं ताकि हम शिष्यत्व की कीमत गिन सकें।

हम समझ सकते हैं कि कभी-कभी इसमें पीड़ा भी शामिल हो सकती है, इसमें सार्वजनिक तिरस्कार भी शामिल हो सकता है, लेकिन फिर भी हम यीशु के अनुयायी बनना चुनते हैं और देखते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन में क्या कर सकता है। आप जानते हैं, मुझे संडे स्कूल का गाना पसंद है, जो शिष्यत्व की कीमत और मेरे संकल्प के बारे में सोचते समय मेरे विचारों को गहराई से सारांशित करता है। मैंने यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लिया है, पीछे मुड़कर नहीं देखना है।

मैंने यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लिया है, बिना पीछे मुड़े और बिना पीछे मुड़े। यही आपका गीत हो, यही आपका संकल्प भी हो। इस भोजन-समय प्रवचन में यीशु का अनुसरण करने की कीमत के बारे में सोचते हुए हमारे साथ इन व्याख्यानों का अनुसरण करने के लिए आपका धन्यवाद।

धन्यवाद।

यह डॉ. डैनियल के. डार्को हैं जो लूका के सुसमाचार पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 23 है, भोजन के समय राज्य पर प्रवचन, लूका 14।